ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 478-481
www.allresearchjournal.com
Received: 24-11-2018
Accepted: 26-12-2018

अशोक कुमार अमर
दिवारी, कबरिया, सदर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अशोक कुमार अमर
दिवारी, कबरिया, सदर, दरभंगा, बिहार, भारत

रामवृक्ष बेनीपुरी – साहित्य अभिव्यक्त और राष्ट्रीय चेतना

अशोक कुमार अमर

सारांश
रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने साहित्य में किसान, मजदूर, दलित, मुसलमान की समस्याओं का चित्रण किया है। इस संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा हैं– किसी भी रानीतिज्ञ के लेखन में स्वाधीरता आंदोलन के अंतर्विरोधों का ऐसा सजीव चित्रण नहीं मिलता जैसा बेनीपुरी की रचनाओं में मिलता है। इनका महत्व केवल पुराने इतिहास जानने के लिए नहीं, वरन उस इतिहास को जानकर आज के भारत की समस्याओं को समझने और उन्हें सुलझाने के लिये भी है।

प्रस्तावना
बेनीपुरीजी ने जमींदारी का विरोध किया था। उनका मानना था कि जब तक जमींदारी प्रथा खत्म नहीं कर दी जाती तब तक किसान की मुक्ति संभव नहीं है। वह लिखते हैं किसानों का उद्धार तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि जमींदारी प्रथा को जड़मूल से उच्छेद नहीं कर दिया जाए एवं उन पर जो भारी कर्ज है, उसे बिल्कुल मंसूख नहीं कर दिया जाए। किसानों पर भारी कर्ज था उनकी ऐसी स्थिति नहीं थी कि वह कर्ज अदा कर सकें। उनकी मुक्ति का एक ही रास्ता था कि उनका कर्ज माफ कर दिया जाए। मुजफ्फरपुर में किसान सभा का सम्मेलन हो रहा था जिसके सभापति थे स्वामी सहजानंद सरस्वती इस सम्मेलन में बेनीपुरीजी ने जमींदारी प्रथा के उठा देने और किसानों के कर्ज मंसूख कर दिने का प्रस्ताव पेश करना चाहा। इस सम्मेलन में कांग्रेसी भी सम्लित हुए। उनकी दोगली नीति को स्पष्ट करते हुए बेनीपुरी जी लिखते हैं– हमारे ये कांग्रेसकर्मी भ्राहबंद दावत तो खा रहे थे वहाँ के सुप्रसिद्ध जमींदार मनियारी महंत की और किसान सम्मेलन में माननीय प्रतिनिधि बने थे किसानों के। इन लोगों ने इस प्रस्ताव की सख्त मुखालफत की। उनमें से एक ने तो यहां तक कह डाला कि यदि यह प्रस्ताव पास हआ तो यहां खून की धारा वह जाएगी। सम्मेलन में जहां–तहां महंतजी के लठैत भी खडे थे। स्वामी जी ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि वह इस प्रस्ताव से तदस्थ हैं। प्रस्ताव पर काफी बहस हुई। संयोग से रामानंदन मिश्र भी वहाँ पहुंचे हुए थे। उन्होंने मेरे प्रस्ताव का जबरदस्त समर्थन किया। बहस होते–होते शाम हो गई, दू–दूर से किसान आए थे, लेकिन तो भी वे डटे रहे। इस प्रस्ताव ने उनकी आंखों में चमक ला दी थी, उनके चेहरे पर नवजीवन–सा खेल रहा था। मानो, बहुत दिनो पर उन्होंने अपनी बीमारी की सच्ची दवा पाई हो। हमारे कांग्रेस नेताओं की लंतरानियों और महंतजी के लठैतों की लाठियों की ओर उनका न ध्यान था, न परवाह थी। आखिर काफी रात बीतने के बाद जब वोट लिए गए, तो प्रस्ताव बहुत बड़े बहुमत से पास हो गया।
बेनीपुरीजी आगे लिखते हैं कि– इसी समय से हमारा प्रवेश किसान सभा में हुआ और धीरे–धीरे उसकी प्रांतीय किसान कौंसिल में बिहार सोशलिस्ट पार्टी के समर्थकों का बहुमत हो गया। बहुमत होने पर मैंने जमींदारी और कर्ज मंसूखीवाला प्रस्ताव वहां पेश किया और वह पास हो गया। लेकिन स्वामी जी ने किसान सभा छोड देने की धमकी दी तो मैंने पास हुआ प्रस्ताव वापस कर लिया। उसके लगभग एक वर्ष बाद हाजीपुर में प्रान्तीय किसान सम्मेलन में यह प्रस्ताव, सो भी स्वामी के चलते शब्दों के हेर–फेर के साथ, कहीं पास हो पाया। हां उसके पहले मेरे सभापतित्व में पटना जिला किसान सम्मेलन ने भी यह प्रस्ताव पास कर दिया था और मुंगेर जिला किसान सम्मेलन ने भी। मैं योगी द्वारा भी इसके लिए काफी जनमत तैयार कर चुका था।
अंग्रेजी साम्राज्य खत्म हुआ। विदेशी कोठीवाले भी चले गए। लेकिन देशी जमींदारों का शोषण व जुल्म बना रहा। जमींदारी भी बनी रही। इस देश की सबसे बडी जमींदारी बिहार में थी, जिसकी संपत्ति करोडों में कूती जाती थी। लखपति जमींदार तो पग–पग पर मिलते थे। समूचे बिहार में महाराजों, राजों, बाबुओं की भरमार थी। कहीं बाबू शब्द किरानी के लिए प्रयोग होता है, बिहार में तो वह बडे ही सम्मान का शब्द रहा है। यहां के बड़े से बड़े नेता आज तक अपने को बाबू कहे जाने में ही गर्व अनुभव करते हैं।

जमींदारों के जुल्म के खिलाफ जगज–जगह आवाज उठने लगी थी। उनमें से एक आवाज थी, मशहूर वकील बाबू अरिक्षण सिंह की। वे किसानों की सभाएं करते थे, किसानों के पक्ष में बोलते थे। जब भारत में राजकीय कृषि कमीशन आया था, उसके सामने उन्होंने किसानों की ओर से गवाही दी थी और पं0 मोतीलालजी ने एक सर्वदल सम्मेलन बुलाया था, इन्हें भी किसानों के प्रतिनिधि की हैसियत से निमंत्रित किया गया था।

स्वामी विद्यानंद ने जमींदारों में बड़ी हलचल पैदा की। वे अचानक दरभंगा जिले में पुच्छलतारा की तरह वह आ गिरे और थोडे दिनों तक ऐसी धमाचौकडी मचाई कि बिहार के सबसे बड़े जमींदार का भी आसन डगमगाने लगा। स्वामी जी ने किसान समाचार नाम से एक पत्र निकाला और उसी समय किसान मित्र नामक पत्र निकला जिसके संपादकीय विभाग से बेनीपुरी जी भी संबद्ध थे।

बेनीपुरी जी ने योगी पत्र को किसान आंदोलन का मुखपत्र–सा बना दिया था। फैजपुर कांग्रेस में किसान सभा ने जमींदारी उठाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस प्रस्ताव पर पं. जवाहर लाल नेहरू विगड उठे थे– उसे कबलअजवक्त कहकर टाल दिया था।

बेनीपुरी जी कई जिला किसान सम्मेलनों के सभापति रहे। प्रांतीय किसान सभा के सभापति चुने गए, अखिल भारतीय किसान सभा के उपसभापति रहे।

उन्होंने इन जिम्मेवारियों को बड़े ही उत्साह और स्नेह से वहन किया। 1934 के भूकंप के बाद हिसान आंदोलन में बड़ी प्रगति भी हुई थी। स्वामीजी ने हम समाजवादियों को काम करने की पूरी स्वतंत्रता और सुविधा दी थी। साथी जय प्रकाश नारायण प्रांतीय किसान सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए थे।

देश में अंतरिम सरकार बनी। ये सरकारें भी जमींदारों के पक्ष में काम करने लगीं। किसानों में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। बिहार मंत्रिमंडल के एक फैसले का वर्णन करते हुऐ बेनीपुरी लिखते हैं रू " किसान आंदोलन ने तानाशाह जमींदारी के होशहवास दुरुस्त कर दिए। तानाशाह विशेषण हमने इसलिए दिया कि कुछ ऐसी छोटी–छोटी जमींदारियां हैं, जहां के चतुर जमींदारों ने जमाने को देख अपना रवैया बदला है और वहां के किसानों में उनके प्रति वही प्रेम और भक्ति है। किंतु जो लाठी के बल पर राज करने के आदी थे और जो अपनी इस आदत को छोड़ने के लिए तैयार न थे, उनकी खैर नहीं। बात यहां तक बढी है कि उस दिन छपरा में बांकी खजाने में कई जमींदारों की नीलामी हुई तो कोई खरीदने वाला तक नहीं मिला। जो जमींदारी कभी बैठे–ठाले निठल्ले लोगों के लिए बिना मेहनत–मशक्कत की अच्छी आमदनी का जरिया थी, वही आज बवालेजान बन गई है– बाजार में उसका खरीदार नहीं, समाज में उनके लिये इज्जत नहीं। ठीक इसी मौके पर हमारी बिहार सरकार आगे आकर जमींदारों की रक्षा का एक उपाय करने जा रही है, ऐसी खबर अखबारों में छपी है। कहा गया है, बिहार सरकार एक कानून बनाने जा रही है, जिसके अनुसार वह ऐसी जमींदारियों को खरीद लेगी, जिन्हें उनके मालिक सरकार के हाथ सौंपने को तैयार हैं। हम स्पष्ट कर दें, बिहार के किसान सरकार की इस उदारता के लिए कृतज्ञ नहीं हो सकते। बिहार प्रांतीय किसान सभा एवं हाल ही गया में हुई अखिल भारतीय किसान सभा ने स्पष्ट कर दिया है कि जमींदारों को किसी कदर का मुआवजा या कीमत देने के वह खिलाफ है। बिहार के किसान कर्ज के बोझ से इस कदर परेशान हैं कि वे इस अतिरिक्त बोझ को सह नहीं सकेंगे।

किसान सभी जमींदारी का सौदा नहीं चाहते, वह तो उनका नाश चाहते हैं मंत्रिमंडल इसे सदा याद रखे। जमींदारों की नृशंसता का वर्णन करते हुए, बेनीपुरी जी ने लिखा रू " दरभंगा जिले के बहेरा थाने में जगदीशपुर एक छोटा सा गाँव है। अधिकांश में वह खेत मजदूरों की बस्ती है। युगों से जिन्हें चूस–चूसकर, जिनकी एक–एक धूर जमीन छीनकर बेकस और दरिद्र बना दिया गया है यह वहीं खेत मजदूर हैं। तुम्हें मुफ्त की बेगारी देनी होगी, तुम जो खून सुखाकर कमाओंगे, हमारा होगा और तुम भूखों मरो– मालिकों का यही हुक्म था। जगदीशपुर के खेत मजदूरों ने जरा सा श्नाश किया और उस दिन जमींदारों ने घातक शस्त्रों दृ भाले, गंडासे, बरछे और चार बंदूकों से लैस होकर जगदीशपुर पर संगठित हमला कर दिया। नदी की एक गीड पर खडे जमींदारों ने बंदूक से निशस्त्र, निहत्थे नर–कंकालों का जंगली जानवरों की तरह शिकार किया।

दरभंगा में जमींदार से किसान मारचा ले रहे थे। बेनीपुरी ने इसका वर्णन करते हुए लिखाः ष्प्रांत की ही नहीं, देश की सबसे बड़ी जमींदारी दरभंगा से आज सकरी और उसके आस–पास के किसान मोरचे ले रहे हैं। कहां दरभंगा नरेश, कहां वे भुखमरे। एक ओर करोड़ों की संपत्ति, उस संपत्ति से पैदा हुई ताकत–सरकार मुट्ठी, में संसार पैरों पर। उनके ट्रैक्टर हड–हड करके किसानों के खेतों को पस्त करते, उनकी आर–बांध को मटियामेंट करते, उसके सिपाही किसानों के सिर तोडते, उन्हें दिन दहाडे लूटते। पुलिस की क्या ताकत जो बोले मजिस्ट्रेसी जिसकी भवों के बल पर नाचती है। तो भी, किसान डटे हैं– क्यों न डटें? अपनी जमीन खोकर जिंदगी भर बाल–बच्चों के साथ तडप–तडपकर मरने के बनिस्पत तो जमीन पर लाटिया खाते हुऐ या जेल में पेटभर खाते हुऐ मरना कहीं अच्छा है? हो सकता है, दरभंगा नरेश जीत भी जाएं, रस्से बंटे। किंतु जैसा कि पं. यदुनंदन शर्मा ने वहीं बोलते हुये कहा, हमें डर है कहीं वह रस्सा जमींदारी प्रथा के गले में फांसी न बन जाए।

1937 में किसान संघर्ष दूसरी मंजिल में पहुंचता है यह गया से शुरू होता है। मुंगेर भी इसके प्रभाव में आ जाता है। गया जिले के सहबाजपुर सांडा, तारढी, लखाउर,माली और सोनभद्र में यह छिड़ा। और जगह तो मामला आसानी से सुलझ गया, किन्तु सांडा में 107 का मुकदमा, गया के किसानों के एमछत्र नेता पं0 यदुनंदन शर्मा जी एवं कुछ किसान सेवकों और किसानों पर चला और सोनभद्र में जमींदारों ने गोलियां चलाईं. एक किसान मारा भी गया। मुंगेर के बड़हिया टाल में शुरू होते ही उसने भयंकर रूप धारण किया, पं. कर्मानंद शर्माजी के साथ लगभग दो सौ किसान जेलों में ढूंस दिए गए, उन में लगभग पचास पर तो बाजाब्ता मुकदमा चला। ये संघर्ष हुए थे सर गणेश आदि के मंत्रिमंडल के जमाने में। जब कांग्रेस मंत्रिमंडल शुरू हुआ, किसानों ने दिल खोलकर उसका स्वागत किया। उन्होंने समझा, उनके दुख दूर हुए। काश्तकारी कानून में सुधार की बातें होने लगी, बकाश्त के सवाल को हल करने की चर्चाएं चलीं। किंतु और सुधारों के साथ बकाश्त का सवाल भी अधर से लटकता रह गया।

1938 ने रेवरा का वह महान संघर्ष देखा, जिसने भारतव्यापी ख्याति प्राप्त की। बड़हिया का संघर्ष भी रबी की बुआई के आते ही शुरू हुआ और आज तक चला जा रहा है।

रेवरा की विजय और कीर्ति ने सारे देश का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया और 1939 के प्रारंभ में ही प्रांत के कई हिस्सों में बकाश्त संग्राम की आवाज सुनाई देने लगी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने राजनीति में प्रवेश करते ही अमवारी के सवाल को हाथ में लिया और उनके महान व्यक्तित्व के कारण सारन जिले का यह छोटा गॉव कुछ ही दिनों में भारत प्रसिद्ध हो गया। शाहाबाद का मुडियार, मुंगेर का लगार, दरभंगा का राधोपुर और देकुली भी बकाश्त संघर्ष के केन्द्र बने। बडहियाटाल की समस्या नहीं सुलझी, पं0 कार्यानंद शर्मा जी ऊबकर श्रेल सत्याग्रहश तक पर उतर जाए और आज जेल के खींखचों के अंदर बंद मरण त्यौहार के व्रती हैं।

किन्तु अब तक बकाश्त संग्राम अपनी मंजिल पर ही था। बिहार ऐसे बडे प्रान्त में आठ–दस जगहों के ये संघर्ष कोई महत्व नहीं रखते। खासकर, किसान सभा ने हमेशा इन संघर्षों को स्थानीय

बानाए रखने की ही कोशिश की और सरकार की नीति बटती गई। बीच–बिचाव और समझौते के लिए सदा जगह थी। किसानों ने कई बार किसी एक ही निष्पक्ष सरकारी अफसर के हाथ में अपना भाग्य देकर अपने पक्ष के न्यायपूर्ण होने का प्रमाण दिया। रेबरा का मामला दूसरा प्रमाण है।

पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बंबई की बैठक के बाद, मालूम होता है, जैसा तख्ता उल्ट गया, जिसका सबसे बड़ा प्रमाण दरभंगा राज के पंडौल सर्किल का संघर्ष है। पंद्रह दिनों के अंदर ही दो सौ पचास किसान गिरफ्तार हो चुके। सर्वश्री यमुना कार्या, रामानन्दन मिश्र, धनराज शर्मा ऐसे व्यक्तियों को भी नहीं छोडा गया। इन्होंने सत्याग्रह नहीं किया था, तो भी इन्हें पकड़ा गया है।

बेनीपुरी जी सही अर्थों में समाजवादी थे। उन्होंने हर वर्ग और हर तबके के लोगों पर लिखा। उन्होंने कहा है कि यदि हम चाहते हैं कि किसान मजदूर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लें और उसकी सफलता के बाद देश में समाजवादी राज्य कायम हो तो हमें मजदूरों और किसानों के संगठन पर ध्यान देना होगा, उनके दिन–ब–दिन के संघर्ष में संमिलित होना पडेगा, हमारी यह धारणा हो चुकी थी। बिहार में किसान आंदोलन तो बडे जोरों से चल रहा था, अब हमने मजदूरों के आंदोलन और संगठन पर ध्यान दिया। सबसे पहले बसावन के डालमिया नगर के मजदूरों को संघबद्ध किया और वहां एक शानदार हड़ताल चलाकर मजदूरों को जीत दिलवाई। मैं किसान आंदोलन में अपना हिस्सा ले ही रहा था, अब मजदूरों की समस्या की ओर अनुरक्त हुआ।

बेनीपुरीजी ने पटना में मजदूर यूनियन बनाई जिसका नाम था– पटना सिटी मजदूर यूनियन। और जहां यूनियन बनी, हडताल अनिवार्य हो गई। हमारे पूंजीपति नहीं चाहते कि मजदूर संगठित हों, अतः ज्यों ही मजदूरों की यूनियन बनाइ, उसे तोडने की फिक्र में वे लग जाते हैं, अच्छे यूनियन कार्यकर्ता को मिल से निकालने की तरकीबें वे साचने लगते हैं। इधर ज्यों ही संगठन हुआ, मजदूरों में अपने बल का अनुभव हुआ, अपने पर किए गए अन्यायों को दूर करने के लिए वे उतावले हो उठते हैं। इन दोनों की ओर से खिंचाव से हडताल अनिवार्य हो जाती है। एक बार की सफल हडताल के बाद ही स्वाभाविक संबंध स्थापित हो सकता है– यद्यपि देखा यह गया है कि हमारे देश में हडतालों की एक लंबी कडी बनती ही जाती है। यहां के पूंजीपति अब तक इतने बुद्धिमान नहीं हुए हैं कि मजदूर की उपयोगिता समझ सके।

मजदूर यूनियन का आफिस खोला गया। वहां मजदूरों को अक्षर ज्ञान कराकर, मजदूर संगठन के बुनियादी सिद्धांतों की शिक्षा दी जाने लगी। मजदूरों का एक वरदीधारी स्वयं सेवक जत्था भी तैयार कर लिया गया। वरदी पहनते ही नौजवानों में जैसे नई जान आ गई। एक वाचनालय भी खोल दिया गया। मैं वहां प्राय जाता, कामों में निगरानी करता, मजदूरों में आत्मविश्वास भरने की कोशिश करता। थोडे ही दिनों में मजदूरों का जबरदस्त संगठन बन गया। कई बार उन्होंने जुलूस निकाले, मजदूरों के नारों से शहर गूंजने लगा। जुलूसों में लाल वरदीधारी मजदूर स्वयं सेवकों की उपस्थिति और भी शान बढा देती। कई सभाएं हुईं, इन सभाओं ने शहर के नागरिकों की सहानुभूति मजदूरों के पक्ष में कर दी। पूंजीपतियों की बेरुखी देखकर अंततः हडताल के लिए अल्टिमेटम भेज दिया गया।

पटना की तीन मिलों में से एक में हडताल की गई। "इसमें सहूलियत यह रही कि बाकी दो मिलों में काम करने वाले मजदूर अपने हडताली भाइयों की आर्थिक सहायता भी करते रहे। हडताल मुकम्मिल रही। हां, कुछ बाबू लोग दफ्तर मे जाते रहे। इंजीनियरिंग स्टॉफ के लोग भी हिचक में पड़े रहे। उन्हे कैसे रोका जाए, पिकटिंग शुरु की गई।

कांग्रेस मंत्रिमंडल था। हमने समझा था, उस जायज हडताल की ओर मंत्रिमंडल की स्वाभाविक सहानभूति होगी। किंतु यह क्या– एक दिन पुलिस ने जबरदस्त लाठी चार्ज कर दिया। मैं श्जनताश आफिस में था। घटनास्थल पर योगेन्द्र शुक्लजी थे। उनके साथ भी बदतमीजी की गई। शुक्लजी तुंरत जेल से छूटकर आए थे, उन्हीं को लेकर मंत्रमंडल ने इस्तीफा तक दिया था। जब उनके साथ ऐसा सलूक, तो फिर दूसरों की क्या बात ? लाठी चार्ज के बाद पुलिस ने हड़ताली मजदूरों में से बहुत से लोगों को बस में चढ़ाकर शहर से बहुत दूर पर छोड़ दिया। संध्या का समय था। हड़तालियों में बहुत – सी मजदूरिनें भी थीं उन्हें इस प्रकार शहर से दूर, सुनसान जगह में छोड़ आना– न इसमें नैतिकता थी, न मानवता। सारा शहर खलबला उठा! बेनीपुरी जी लिखते हैं– इस कांग्रेसी शासन की स्थापना के लिए हमने कितना किया था! गांव–गांव, गली–गली घूमे, किसानों से, मजदूरों से, कांग्रेस का वोट देने के लिए अपील की। पैदल चले, बैलगाड़ी पर चले, साइकिल से गए– मोटरें तो कम ही नसीब हुई। यही नहीं, तीन–तीन महीने की जो सजाएं भुगतीं, वह इसी कांग्रेसी शासन की स्थापना के लिए ही न? और कैसा तमाशा, कांग्रेसी शासन के कुछ महीने ही गुजरे हैं और मैं जेल में हूं।

जमशेदपुर की तार कंपनी की हड़ताल बहुत कामयाब रही, लेकिन सोशलिस्ट पार्टी के एक साथी सरदार हजारा सिंह कंपनी की मोटर के नीचे शहीद हो गए थे द्य इस हड़ताल का नेतृत्व जय प्रकाशजी ने किया था। लेकिन वहां भी मुख्यतः कांग्रेस के चलते सफलता नहीं मिल सकी।

गया के काटन मिल की हड़ताल के सिलसिले में हड़तालियों को सजाएं हुई और एक बैच को तो तुरन्त सजा हुई। स्थानीय बिहारीजी मिल के बारे में भी यही नीति बरती गई। नौ हड़तालियों को आठ रुपए से बारह रुपए तक का जुर्माना हुआ। बेनीपुरी जी लिखते हैं– भारतीय किसानों और मजदूरों को दो–दो मंजिलें तय करनी हैं। ब्रिटिश साम्राज्यशाही को मिटाकर हिंदुस्तान में जनतंत्र कायम करना और यहां की देशी सामंतशाही और पूंजीवाद को मिटाकर किसान–मजदूर राज बनाना है। हमारी कठिनाई और भी बढ़ जाती है, जब देखते हैं– हमें एक साथ ही दोनों कार्यक्रम चलाने हैं। हम अपनी दोहरी लडाई को इस तरह चलाएंगे कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही के हटते ही देश की संपत्ति, कारखानों, उत्पादन के साधनों और सरकार पर भी किसानों और मजदूरों का अधिकार जो जाए! हम तो भूरी नौकरशाही की जगह काली नौकरशाही बरदाश्त नहीं करेंगे। हमें तो देखना है स्वराज्य होने पर किसान– मजदूर राज स्थापित करने के लिए फिर क्रांति– दूसरा गृहयुद्ध–करने की जरुरत न पडे।

अतः हमें दुर्गम घाटियों से चलना है। हमारी परिस्थिति भी कुछ भिन्न है। हमारे यहां किसान और मजदूर एक– दूसरे के सहयोग के अभाव में अपनी लड़ाई जीत नहीं सकते। अतः दोनों को कंधे से कंधे भिडाकर चलना है। इसीलिए अखिल भारतीय किसान सभा के प्रधानमंत्री स्वामी सहजानंद सरस्वती ने हिंदुस्तान के किसानों से मई दिवस मनाने की अपील की है। हम उनके शब्द–शब्द का समर्थन करते हैं। 1 मई मजदूर दिवस है। इस दिन के इतिहास को बताते हुए बेनीपुरी जी लिखतू हैं कि 1 मई 1886 को शिकागो के मजदूरों ने अधिक काम, मजदूरी और अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह किया। मार्केट से एक बड़ा जुलूस निकला। चार, आठ के नारे आसमान को भेद रहे थे। वह मांगते थे– आठ घंटे मेहनत, आठ घंटे नींद, आठ घंटे आराम और प्रतिदिन आठ शिलिंग मजदूरी। मजदूरों के प्रदर्शन से तिजोरियों वाले महल थर्रा उठे। सरकार, जो प्रायः पूंजीपतियों की ही होती है, उनकी मदद को पहुंची। गोलियां चलाकर प्रदर्शन खत्म कर दिया गया। मजदूरों के चार नेता शिकागो नगर में फांसी पर चढा दिए गए। इन्हीं चार नेताओं की स्मृति में अमरीका के मजदूरों ने 1 मई को हर साल मई दिवस मनाना शुरू किया।

संदर्भ

1. स्वाधीनता और समाजवाद– श्री रामबृक्ष बेनीपुरी, 2001, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
2. आधुनिक भारत– बिपिन चंद्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली, संस्करण–2015
3. रामवृक्ष बेनीपुरी (मोनेग्राफ)– रामवचन राय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
4. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि– ए.आर. देसाई, मैकमिलन इंडिया लि., नई दिल्ली, 1977
5. मस्तराम कपूर (सं.)– रामवृक्ष बेनीपुरी रचना संचयन, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2000, पृ. सं. 388
6. भारत में राष्ट्रीय आंदोलन– बिपिन चंद्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली